मौर्यकालीन आर्थिक संरचना : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ0 विजय कुमार पाण्डेय

उत्तर भारत राजनीतिक सत्ता का मुख्य केन्द्र केवल मौर्यों या गुप्तों के समय में नहीं रहा है बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों से ऐसा विदित होता है कि महाभारत काल में मगध और हस्तिनापुर राजनीतिक सत्ता के साथ–साथ उत्कृष्ट शासन और आर्थिक समृद्धि के केन्द्र रहे हैं। यह बात सत्य है कि अवनति के काल खण्ड में भयंकर युद्ध के केन्द्र भी बने। महाभारत और पुराणों के अनुसार प्राक् ऐतिहासिक काल में चेदिराज वसु के पुत्र वृहद्रथ ने गिरिब्रज को राजधानी बनाकर मगध में अपना राजवंश स्थापित किया था। वृहद्रथ का पुत्र जरासंघ महाबलि हुआ। इस महाबलि ने अपने भुजबल से अनेक राजाओं को अपने अधीन कर राजेन्द्र अथवा सम्राट का पद प्राप्त किया था। काशी, कोशल, चेदि, दशार्ण (मालव) विदेह, अंग, बंग, कलिंग और दक्षिण में पाड्ेय आदि प्रदेशों के राजा, उत्तर–पश्चिम में सौवीर, मद्र, कश्मीर, गंधार आदि के नृपति जरासंघ के प्रताप के सामने अवनत हुए थे। इसीलिए पुराणों में जरासंध को महाबाहु, महाबलि और देवेन्द्र के समान महातेज वाला कहा गया है। इस प्रकार अतुलित बलशाली जरासंध ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस विशाल साम्राज्य के लिए विकास के लिए उसने कृषि के साथ–साथ औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्रों की सुव्यवस्था की। अत्याधुनिक अस्त्र–शस्त्र दैनिक जीवन की उपयोग वस्तुएं, साज श्रृंगार की विभिन्न वस्तुओं और विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धातु निष्कासन, धातु उद्योग और इससे संबंधित विभिन्न प्रकार के खनन उद्योग, बहुमूल्य पाषाण एवं सामान्य पाषाण उद्योग, वस्त्र उद्योग, बर्तन उद्योग, अस्त्र–शस्त्र उद्योग, काष्ठ एवं विभिन्न प्रकार के अन्य उद्योगों का विकास कर राज्य की आर्थिक समृद्धि की व्यवस्था की जरासंध का बल अतुल था।